भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 12 | **जनवरी-फरवरी (संयुक्तांक)** 2011 | **अंक** 1-2

स्मरण

जन्म 4.4.1889 — *मृत्यु* **30.1.1968**

एक भारतीय आत्मा

एक महत्त्वपूर्ण अवसर था वर्ष 1927 में भरतपुर में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सत्रहवाँ अधिवेशन। उसे रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पुरुषोत्तमदास टण्डन, मदनमोहन मालवीय, अमृतलाल चक्रवर्ती, चांदकरण शारदा, गौरीशंकर हीराचंद ओझा, माखनलाल चतुर्वेदी, बनारसीदास चतुर्वेदी और शिव स्वामी अय्यंगर सरीखी विभूतियों ने अपनी उपस्थिति से धन्य किया था। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ और पुरातत्ववेत्ता गौरीशंकर हीराचंद ओझा उस सममेलन के अध्यक्ष थे। जबकि उस अवसर पर आयोजित सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष थे कवि और सम्पादकाचार्य **माखनलाल चतुर्वेदी**। 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से साहित्य जगत में विख्यात माखन दद्दा ने उस अवसर पर 30 पृष्ठों के अध्यक्षीय भाषण में जिस तल्खी के साथ तत्कालीन हिन्दी पत्रकारिता में व्याप्त विकृतियों की शल्य-क्रिया की थी, वह द्रष्टव्य है। उन्होंने कहा था, ''हमारे पास दैनिक हैं, पर न उनके पास रिपोर्टर हैं, न हमारे कार्यालय में साहित्य है, न हमारा कमरा विश्व के आने वाले विद्युत सन्देशों, वायु सन्देशों और यंत्र सन्देशों का भण्डार ही है। हम भले ही सिटी में रहते हों, परन्तु हमें सिटी एडिटर की जरूरत नहीं, मैनेजिंग एडिटर भी सिर्फ नाम के हैं। हमारा वह विस्तार कहाँ, जिसमें व्यापार सम्पादक, समुद्र सम्पादक, शिक्षण और शाला सम्पादक, साहित्य सम्पादक, नाटक और संगीत सम्पादक और आलोचक हों? मैं आपसे पूछता हूँ, हिन्दी में हमारे इतने शक्तिशाली होने का दिन कब उगेगा?''

आज भले ही देश के कोने-कोने में विधिसम्मत विश्वविद्यालयों और निजी क्षेत्रों में जनसंचार, पत्रकारिता के सैकड़ों संस्थान खुल चुके हैं, लेकिन क्या आज भी हम उस स्तर को हासिल कर पाए हैं, जिसकी कल्पना दद्दा ने की थी?

उत्तरायण के बीच : एक मैराथन

वर्ष-परिवर्तन के साथ सदी का दूसरा दशक आरम्भ हो चुका है। उत्तरायण हो चुका है सूर्य और ऋतु-चक्र में सुनयी दे रही है वसन्त की पदचाप!

प्रकृति की इस सहज-गति के समानान्तर हमारे युगधर्म की दौड़ जारी है। लोग दौड़ रहे हैं, दौड़ते जा रहे हैं, वैश्वक-स्तर पर चल रही है यह 'मैराथन'। दौड़-भाग का यह क्रम तीव्र से तीव्रतर होता जाता है जिसमें कोई रोक नहीं, ठहराव नहीं। अविराम दौड़ते हुए मनुष्य ने अपनी इतिहास-यात्रा में संघर्ष के साथ-साथ सभ्यताएँ बनायीं, सांस्कृतिक-प्रतिमान स्थापित किये। अपनी इस दौड़ में उसने धरती को जीतकर सागर को भी बाँध लिया और अब तो आकाश भी उसकी मुट्ठी में है। जल-थल-नभ में दौड़ लगा रहा है मनुष्य, जारी है मैराथन!

इस दौड़ ने मनुष्य की मांसपेशियों को अयस्क में ढाल दिया है, छीजने लगी हैं मनोमस्तिष्क में हिलोर मारती संवेदनाएँ, केवल लपलपा रही हैं उसकी सहस्रमुख वासनाएँ। अर्जित धन, शक्ति और विज्ञान के बल पर उसने लड़े हैं दो-दो महायुद्ध, भीषण नर-संहार किये हैं फिर भी उसे चैन नहीं है। राजनयिक तौर पर लोकतंत्र के कलेवर में उसने कायम कर रखा है मध्यकालिक राजतंत्र-सामंततंत्र। इसके साथ ही सेना और प्रशासन को साथ लेकर इसी परिधि में अब वह फैला रहा है अपना आर्थिक-साम्राज्य। पूँजी एवं राजनय के लक्ष्यहीन, स्वार्थपरक गठबन्धन की गिरफ्त में हैं हमारी सामाजिक संस्थाएँ जिनके केन्द्र में अब व्यक्ति, व्यक्ति नहीं बल्कि 'नम्बर' है और यह नम्बर उस कल-पुर्जे का है जो किसी विशाल यंत्र का एक पेंच भर हो सकता है जिसके होने की सार्थकता उसका 'पेंच-त्व' है न कि उसका व्यक्तित्व, उसकी मनुष्यता। समग्र प्राकृतिक-ऊर्जा से लबालब, आत्म-चेतना से सम्पन्न मनुष्य के जीवंत-जीवन का यह यांत्रिक-विद्रूप, जीवन के रचनाकार को, स्वयं विधाता को झकझोर सकता है किन्तु पूँजीतंत्र के संवेदनहीन तांत्रिक के लिए यही रोजमर्रा है, उसका दैनिक कार्य-व्यापार है। उसकी परिधि में प्रेम-ममता-वात्सल्य, स्नेह-करुणा-संवेदना जैसे संवेगों के लिए कोई अवकाश नहीं, मनुष्यता का कोई मूल्य नहीं।

सतत मूल्य-क्षरण के इसी परिदृश्य में केन्द्रीय-सत्ता और कारपोरेट्स द्वारा संचालित बाज़ार की गिरफ्त में है हमारी सांस्कृतिक विरासत, जो लगभग 25 हजार सालों से आज की तारीख तक विकसित ज्ञान-विज्ञान की थाती से समृद्ध है और इस विशाल विरासत के वारिस अर्थात् होनहार किशोर-युवावर्ग को वंचित करते हुए, उसी विरासत को 'ब्रांडेड' बनाने की मुहिम चल रही है। प्राथमिक कक्षाओं से विश्वविद्यालय तक परीक्षाओं/प्रतियोगिताओं के दरम्यान क्रमशः बदलते जाते हैं छात्रों के मानसिक-घटक, सोच का दायरा विस्तृत होकर भी सिमट जाता है, अंततः वे किसी विशाल यंत्र के पुरजे बनकर रह जाते हैं। वे जान भी नहीं पाते कि उनकी 'सुजलां-सुफलां', पूँजी-राजनय की दृष्टि में कोई राष्ट्रीय-प्रतिमान नहीं बल्कि उत्पादन-हेतु ब्राण्डेड-संसाधन है। उनकी प्रतिभा, उनकी सर्जनशीलता और श्रम को उनकी सांस्कृतिक इयत्ता से काटकर उन्हें केवल 'रिजल्ट-ओरियेन्टेड'/परिणामोन्मुख होने की मंत्र-

शेष पृष्ठ 2 पर